

मसीह/मसीहा पुं. (अर.) 1. चमत्कारी सिद्ध पुरुष जो रोगियों को स्वस्थ और मृतकों को जीवित कर कसे 2. ईसाई मत के प्रवर्तक ईसा मसीह 3. फारसी आदि के काव्य में प्रेमपात्र 4. किसी का उद्धार, कल्याण करने वाला, बचाने वाला।

मसू स्त्री. (देश.) कठिनाई, दिक्कत।

मसूड़ा पुं. (तत्.) 1. दाँतों के ऊपर-नीचे का माँस जिससे दाँत निकलते हैं।

मसूर स्त्री. (तत्.) एक प्रकार का द्विदल अन्न, दाल, यह रबी की फसल में बोया जाता है, इसे मलका भी कहते हैं, यद्यपि दोनों में सामान्य अंतर है।

मसूरिका स्त्री. (तत्.) 1. शीतला माता, चेचक, छोटी माता, खसरा रोग, जिसमें शरीर में मसूर के आकार की लाल-लाल फुंसियाँ निकल आती हैं 2. संस्कृत में कुटनी, दूती को भी मसूरिका कहा जाता है।

मसूरी पुं. (देश.) 1. छोटे कद का एक वृक्ष जिसका पतझड़ शिशिर ऋतु में होता है 2. चेचक, खसरा रोग।

मसृण वि. (तत्.) 1. स्निग्ध, चिकना, कोमल, मुलायम 2. सुंदर, चमकीला।

मसोसना स.क्रि. (देश.) 1. क्रोधादि मनोवेग को दबाना, रोकना 2. मन में कुढ़ते रहना 3. मरोड़ना 4. पश्चाताप, पछतावा।

मसौदा पुं. (अर.) 1. प्रारूप, मसविदा 2. किसी काम, बात के विषय में पहले से विचारित उपाय, युक्ति।

मसौदेबाज वि. (अर.) 1. अच्छा उपाय सोचने वाला, अच्छी युक्ति सोचने वाला 2. धूर्त, चालक।

मस्कर पुं. (तत्.) 1. बाँस 2. दंड, डंडा।

मस्करी पुं. (तत्.) 1. संन्यासी, साधु 2. चंद्रमा।

मस्जिद पुं. (अर.) 1. मुसलमानों का नमाज पढ़ने का स्थान 2. ईश्वर के समक्ष सिर झुकाने का स्थान।

मस्त वि. (फा.) 1. नशे में चूर, मदोन्मत्त, मतवाला 2. धन या यौवन आदि के मद से युक्त 3. निश्चित और बेपरवाह 4. अचेत, बेसुधा, बेखबर 5. बहुत अधिक प्रसन्न, आनंदित 6. कामातुर, काम भावना के अधीन 7. किसी विषय आदि में पूरी तरह लीन।

मस्तक पुं. (तत्.) 1. सिर, माथा 2. शिखर, चोटी 3. किसी वस्तु का ऊपरी भाग, सर्वोपरि भाग।

मस्तगी स्त्री. (अर.) कुछ सदाबहार वृक्षों से प्राप्त होने वाला पीला गंधित गोंद।

मस्ताना वि. (फा.) 1. मस्त 2. मस्तों की तरह, मस्तों जैसा 3. मस्त होना 4. मस्त रहना।

मस्तिष्क पुं. (तत्.) 1. सिर के अंदर का गूदा/भेजा/मगज/दिमाग, जिस अंग द्वारा प्राणी विचार करता है 2. सोचने-समझने की बुद्धि, मानसिक शक्ति।

मस्ती स्त्री. (फा.) 1. मस्त होने की अवस्था, भाव 2. उन्माद नशा, मतवाला 3. कामवेग 4. चिंतामुक्त अवस्था, बेपरवाही 5. निश्चेष्टता, बेसुधी, बेखबरी 6. हाथी का मद 7. वृक्षों, पत्थरों आदि में कभी-कभी होने वाला एक प्रकार का स्राव।

मस्तूल पुं. (तत्.) बड़ी नाव या जहाज के बीच में गाड़ा हुआ लंबा लट्ठा जिसमें पाल बाँधा जाता है।

मस्सा पुं. (तत्.) 1. शरीर पर दाने के रूप में उभरा हुआ माँसपिंड 2. शरीर पर होने वाला काला तिल।

महत पुं. (तत्.) साधुमंडली या मठ का अधिष्ठाता, मुखिया 2. श्रेष्ठ, प्रधान, मुखिया।

महंगा पुं. (तद्.) 1. जिसकी कीमत सामान्य से अधिक हो 2. जिसकी कीमत पहले की अपेक्षा अधिक हो 3. जिसे पाने, करने के लिए या बनाए रखने के लिए बहुत व्यय करना पड़े, कष्ट उठाना पड़े या कलंकित, अपमानित होना पड़े।